से होकर शुरू होती है ।अफीम सागर में कलुआ निम्नजाति के लोगों का प्रतिनिधि बनकर आता है।भारत में 'दलित' शब्द सबसे पहले महात्मा ज्योतिराव फुले ने 'untouchables' केलिए प्रयोग में लाया ।दलित शब्द की व्याख्या करते हुए एम् एन वानखेड़े ने कहा कि "the term dalit includes not only the bauddhas or backward classes but all the suppressed and working classes".[8]अफीम सागर उपन्यास में केवल भारत की जाति भेद मात्र नहीं ब्लैक,वाइट,रेड टैग से होने वाले अत्याचारों का खुलंत चित्रण है।इस पर बाबुराव बागुल नामक आलोचक कहते हैं"our definition of dalit includes blacks,whites,and reds of america and afro asian countries .it also includes untouchables,tribals,and other exploited people of our country."[9] अफीम सागर उपन्यास में ज़ेकरी रीड नामक पात्र ब्लैक की दर्ज़े में आता है।अमेरिका में पले बड़े ज़करी रीड अपने वर्ण के नाम पर पिछड़े होने का अनुभव करता है,इसीलिए वह आइबिस कश्ती के फिटिंग के काम केलिए भारत आता है।अपनी स्वामी साम्राज्यवादी बेंजमिन बुन्हैम से वह एक प्रसंग में कहता है "अगर गुलामी आज़ादी है तो मुझे खुशी है कि मैं उनसे आजीविका नहीं कमा रहा हूँ।चाबुक और जंजीरें मुझे पसंद नहीं हैं।"[10] इस बात से उनकी प्रतिरोधी भावना व्यक्त है।उपन्यास में जोडू नामक पात्र भी निम्न होने की वजह से अधिकारियों के अधीन होकर आइबिस में काम करता है।एक मेहतर के रूप में,उसे मूतदान माँजने,शौचालय साफ करने,बर्तन धोने,डैक झाड़ने जैसे काम करने होंगे।जोडू को लस्कर और अफ्सर गालियाँ देकर पुकारते हैं।

अमिताभ जी के उपन्यास 'बन्दूक द्वीप' में दलित की स्थिति का वर्णन है।सुंदरबन द्वीप में रहनेवाले एक दलित स्त्री है मोयना।मोयना को अपने बेटे टीपू की पढाई और भविष्य केलिए उत्सुकता थी।लेकिन उसके पति की मौत होने से आर्थिक स्थिति ख़राब हो गयी।लेकिन वैज्ञानिक पिया रॉय ने टीपू की पढ़ाई का इंतज़ाम करने लगी।टीपू को अपना जन्म स्थान लूसिबाड़ी में स्कूल जाना असंभव था।इसीलिए पिया ने उसे कोलकत्ता में एक बोर्डिंग स्कूल में दाखिला दिया।लेकिन दौर्भाग्यवश कक्षा की अमेरिकी सहपाठियों को मालूम हुआ कि टीपू एक दलित है।सहपाटीयों ने उसे तंग करते थे और एक दिन एक प्रभावशाली परिवार के बच्चे के साथ झगडा कर ली और टीपू को स्कूल से निकाल दिया।इसप्रकार दलित बच्चों को शिक्षा से वंचित कराते हैं।भारत जैसे विकासशील देशों में ही नहीं,विकसित देशों में भी जाति के नाम पर अत्याचार हो रहे हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि अभिमन्यु अनत के उपन्यास लाल पसीना,मुड़िया पहाड़ बोल उठा और अमिताभ घोष के अफीम सागर,बन्दूक द्वीप उपन्यासों में सबाल्टर्न लोक नायक हैं।इतिहास केवल पवर power की लेखा जोखा नहीं है। किसी एक समाज और देश के निर्माण में सबाल्टर्न लोगों की पसीना ही बहता है।उन पर ही इतिहास का आधार है।दोनों उपन्यासकारों ने मज़दूर,किसान,स्त्री,दलित और लोक जनता को अपने उपन्यासों का केंद्र बनाया है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1.लाल पसीना,अभिमन्यु अनत,पृ सं 35
2.वही,पृ सं 39
3.वही,पृ सं 40
4.मुड़िया पहाड़ बोल उठा,अभिमन्यु अनत,पृ सं 9
5.वही,पृ सं 55
6.वही,पृ सं 27
7.वही,पृ सं 25
8.Aesthetics of subaltern literature,Dr.Shivaji,DrSargar Shubham Publications,Kanpur,2018,page no.27
9.वही,पृ सं,28
10.अफीम सागर,अमिताभ घोष,पृ सं 66

सूरीनाम की कविताओं में यथार्थवाद

ब्लेस्सनराज्
शोधार्थी हिंदी विभाग
विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.जयचंद्रन.आर
आचार्य हिंदी विभाग,
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

सूरीनाम भारत के लिए अपरिचित देश नहीं है। सूरीनाम में आज भी भारतीय बसते हैं। गिरमिटिया मजदूरी के तहत गए भारतीयों की तीसरी या चौथी पीढ़ी वहाँ रहते है। उन भारतीयों की कोशिश से सूरीनाम में सरनामी साहित्य और संस्कृति पनप रही है। सूरीनाम में बसे भारतीयों के साथ उनकी संवादिक और सांस्कृतिक आवाज को सरनामी साहित्य के माध्यम से प्रकट किया गया है। यहाँ तक कि उनकी क्रियोली हिंदी को 'सरनामी' नाम दिया गया है, और यह भाषा सूरीनाम की एक महत्वपूर्ण भाषा है। प्रख्यात हिंदी लेखिका पुष्पिता अवस्थी जी के शब्दों में :- "यह भोजपुरी बोली से इतर अवधी की भी गोतिया भाषा है। यह हिंदी भाषा का एक स्वरूप है सत्तर प्रतिशत अवधी, बीस प्रतिशत भोजपुरी और दस प्रतिशत मगही से विकसित यह अपनी तरह की अनोखी भाषा है। इसका नवीनीकृत रूप सरनामी नाम से जाना जाता है। इसका साहित्य और व्याकरण हाल में विकसित हुआ है। यह समृद्ध सरनामी भारतवंशियों की सांस्कृतिक भाषा है।"[१]

सरनामी और खड़ीबोली में सूरीनाम के कवि साहित्य सृजन करते आ रहे हैं। मुख्यत: सूरीनाम की कविताएँ सरनामी हिंदी एवं सूरीनाम की संस्कृति के संवाहक है। इसके माध्यम से अपने पारंपरिक धर्म और संस्कृति को बनाए रखने में मदद कर रहे हैं। "इनकी कविताओं में संस्कृति और उससे जुड़ाव की झलक है, भाषा प्रेम की अभिव्यक्ति है, हिंदी सीखने के लिए प्रेरणा है। इनमें समस्त जीवन की अनुभूतियों के बहुआयामी चित्र हैं और अतीत की वेदना है और साथ में है धार्मिक आस्था, भक्ति और लोक-जीवन का संगीत।"२

सारांश : एक साहित्यिक रचना का दायित्व सिर्फ मनोरंजन नहीं है, सामजिक यथार्थ का अंकन भी है। सरनामी कविताओं में सूरीनाम के सामान्य भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जीवन विषमताओं, कटुताओं, विसंगतियां एवं विडंबनाओं का चित्रण किया है। उनकी कविताएँ यथार्थबोध से यानी यथार्थवादी विचारधारा से निकट है। अरस्तु के काल से लेकर समकालीन साहित्य तक का साहित्य यथार्थवादी प्रभाव से मुक्त नहीं है। प्रेमचंद के अनुसार "यथार्थवाद में हमारी दुर्बलताओं, हमारी विशेषताओं और हमारी क्रूरताओं का नग्न चित्रण है और इस तरह यथार्थवाद हमको निराशावादी बना देता है, मानव चरित्र पर से हमारा विश्वास उठ जाता है। हमको चारों ओर बुराई ही बुराई नजर आने लगती है। यह सही है कि संसार में व्याप्त बुराईयों का चित्रण भी यथार्थवाद में होता है, परन्तु जीवन की अन्य वास्तविकताओं का भी वर्णन

यथार्थवाद में होता है, जो जीवन में केवल निराशा ही नहीं भरता, अपितु उसके द्वारा प्रेरणा भी ग्रहण करता है। अतः यथार्थवाद जीवन में निराशा ही नहीं, आशा का सुखद संचार भी करता है।"३ वास्तव में आम जीवन या वास्तविक जीवन का सच्चा दस्तावेज़ ही यथार्थवादी रचनाओं की मूल चेतना है। इसका मुख्य कारण यह है कि सूरीनाम में अपनी ज़िन्दगी के बारे में, पुरखों के बारे में या अप्रवासी यादगार के बारे में ही ज्यादात्तर रचनाएँ हुई हैं । यथार्थवादी विचारधाराओं का उद्भव और विकास मार्क्सवादी विचारधाराओं से हुआ है। मानवीय जीवन , जो यथार्थ को वास्तविक रूप में प्रतिबिंबित करने की चुनौती से जूझ रहा है ,ने सैद्धांतिक चिंतन के माध्यम से अपनी उन्नति का सफर तय किया है। इस चिंतन का स्रोत मुख्यत: मार्क्सवादी विचारधाराओं से आया है ,जिनका मानव इतिहास में बड़ा महत्त्व है। समय के साथ ,यथार्थवाद के आलोचक ने इस सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को विभिन्न रूपों में व्यक्त किया है। लेकिन सूरीनाम की कविताओं में हमें प्रकृतवादी ,ऐतिहासिक , सामाजिक ,और आलोचनात्मक यथार्थ को देखने का अद्वितीय अनुभव महसूस होता है।

साहित्य का अस्तित्व बिना यथार्थ के अधूरा है ,ऐसा मानव इतिहास ने हमें सिखाया है। जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूने वाली सूरीनाम की कविताएँ ,अपनी अद्वितीयता में उनके व्यक्तिगत अनुभवों को सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत करती हैं। इस माध्यम से ,साहित्यिक रचनाएँ उन्हें उनके जीवन की सच्चाई को व्यक्त करने का एक साधन बनाती हैं। त्रिभुवन जी के अनुसार , "सामाजिक यथार्थवाद का अर्थ होता है समाज की वास्तविक अवस्था का चित्रण"।४ इस दृष्टिकोण से ,सूरीनाम के कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने सामाजिक अनुभवों को प्रस्तुत किया है। इन "प्रवासी भारतीय साहित्य के सृजनात्मक हिंदी साहित्य की मूल संवेदना प्रवास की पीड़ा है जो साहित्य में आद्यंत देखने को मिलेगी, यद्यपि उसका स्वरूप विविध सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण बदलता हुआ दिखता है।"५उनकी कविताएँ अपनी विषमताओं ,विद्रूपताओं, निराशाओं ,और कुंठाओं से भरी हुई हैं ,जो हमें उनके सामाजिक जीवन की यथार्थता को सुनिश्चित करती हैं। इन कविताओं के माध्यम से ,हमें उनके मन ,आत्मा ,और समाज के साथ जुड़े हुए भावनात्मक संस्पर्शों का भी एहसास होता है ,जो सिर्फ एक शब्द नहीं ,बल्कि एक पूरे अनुभव का परिचय कराते हैं। गिरमिटिया मजदूरी के तहत गुलामी के दिनों में, एक मशीन की तरह काम करनेवाले, अपने जीवन को तेज प्रसाद खेदू ने इस प्रकार व्यक्त किया है:

हम जब हँसना चाहते हैं।
तब आस-पास का माहौल देखकर
हमारी आँखो में छल-छला आता है पानी।
और हम एक मशीन की तरह पूरी करते रहते हैं
अपनी दिनचर्या निभाते रहते हैं
अपना दायित्व और मुट्ठी में कैद
बीतता रहता है समयचुप-चाप।"६

सामाजिक कुरीतियों से लड़ते हुए जी रहे उनकी जीवन की एक समस्या है कोक्कैन या कोका।वहाँ के पूरे भारतीयों को अवैध कोक के व्यापार से उत्पन्न विषमताओं से जूझना पड़ता है। सूरीनाम के आप्रवासियों के बीच भी यह समस्या गहराई से छू रही है ,जिसमें उन्हें कोक व्यापार का हिस्सा बनाया जा रहा है। सूरीनाम के आप्रवासियों पर यह छापा मारा गया कि वे कोक व्यापारी है। सूरीनाम के वरिष्ठ कवि जीत नाराइन जी के शब्दों में :-

"अपनी धरती का नहीं फिर भी बरवार भरा है
कोलंबिया का कोका हॉलैण्ड के बाज़ार में
हमारे पासपोर्ट पर कलंक लगवा दिया
उस फोटो को कोका दूध का नाम दिया"७

प्रकृतवादी यथार्थवाद एक माध्यम है,जो कवियों को सामाजिक सच्चाईयों को अद्वितीय और अव्याज्य रूप से व्यक्त करने का सौंदर्यपूर्ण तरीका प्रदान करता है। इस शैली का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक और मानविक अथाह सत्यता को प्रस्तुत करना है, जिसे व्यक्ति और समाज दोनों ही स्वीकार कर सकते हैं। राजेन्द्र यादव जी के मुताबिक़ "वस्तु का पूर्ण यथातथ्य चित्र देने के लिए क्या आवश्यक है कि उसके हर पक्ष और विवरण या वर्णन को दिया जाए - या वास्तविकता पर आधारित उन बिंबों और कल्पना-चित्रों के द्वारा उस वस्तु को प्रस्तुत किया जाए जो भौगोलिक, ऐतिहासिक या अन्य वैज्ञानिक दृष्टि से ऐसे हों कि यथार्थ की संपूर्णता की छाप मन पर छोड़ जाते हों।"८

सूरीनाम की कविताएँ प्राकृतिक उपादानों, वस्तुओं और चित्रों के माध्यम से समाज में उपस्थित समस्याओं, जटिलताओं, और विविधताओं को सही दृष्टिकोण से देखने का प्रयास कर रही हैं। इन कविताओं में व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों का सामरिक वर्णन हो रहा है, जो आधुनिक युग के तेज़ बदलावों के बीच उत्पन्न हो रहे हैं। सूरीनाम में सुरक्षित बची हुयी भारतीय संस्कृति की मूल सुंदरता को आधुनिकता की आँधी से बचाने की कवियों की कोशिश उनकी कविताओं में जोरों से अभिव्यक्त हैं । कविताएँ उस सामाजिक बदलाव की चुनौतियों को सुनिए में लेकर आती हैं, जो भारतीय मूल्यों के साथ जुड़े हुए हैं और उनकी जीवन्तता बनाए रखने का संकल्प करती हैं। सूरीनामी कवि 'सुभाग' पेड़ को सूरीनामी हिन्दुस्तानी, पत्ते को भारतीय संस्कृति और हवा को बदलते सामाजिक परिस्तिथियों के रूप में चित्रित किया है।

"पेड़ के पत्ता/हवा गिराई
प्रभु ऐसी हवा कभी ना आवे जो...
हमारा धर्म संस्कृति/एक पत्ता के मिसाल
उड़ा ले जावे।"९

सूरीनाम के भारतीयों की ज़िन्दगी में कटलिस (जंगल काटनेवाला एक हथियार), और खेती के अलावा और कुछ नहीं। उनकी दिनचर्या कुछ इस प्रकार है:- सुबह कटलिस चुमकर खाना लेकर जंगल या खेत में जाकर खूब मेहनत करता

है और वापस शाम को घर आ जाता है। नित मेहनत करने के आलावा उनके पास कोई रास्ता ही नहीं हैं, क्योंकि इसके आलावा वे और कुछ जानते भी नहीं हैं ।'सुभाग' सिर्फ इन्हीं शब्दों से उनके ही जीवन की विसंगतियों और त्रासदियों का अंकन किया है।

"रोज सवेरे कटलिस चूमूँ
रस्ता पकड़ी खेत के/बगल में टाँगू सतवा पानी
और झटक पटक के टाँग बढ़ाऊँ"[१०]

सूरीनाम की कविताओं में यथार्थवाद की ऐतिहासिक भावना व्यक्त है। डॉ सुरेश जी ने भी यह व्यक्त किया है उनके अनुसार "यथार्थवाद जितना हमारे समकालीन जीवन में महत्त्व रखता है; उतना ही अतीतकालीन जीवन में। समकालीन जीवन का सत्यानुभूति से प्रेरित जीवन यथार्थवाद है। अतीतकालीन जीवन का वही चित्रण ऐतिहासिक यथार्थवाद है। जितना अंतर हमारे समकालीन जीवन और अतीतकालीन जीवन में है, उतना ही अंतर ऐतिहासिक यथार्थवाद और यथार्थवाद में हैं।"११

अध्ययन से यह समझ सकता है कि सूरीनाम के भारतीयों का इतिहास उत्कृष्ट है, जिन्होंने अपनी जड़ों को अतीत की गहराईयों से जोड़ा रखा है ,वे अपने पुरखों के साथ चलकर इस नयी भूमि को बसाया हैं, लेकिन वे आज भी अपनी संस्कृति और इतिहास को भूला नहीं हैं। अपने पूर्वजों की आत्मा में विराजमान वेदनाओं के साथ, उन्होंने सूरीनाम को एक नए श्रीराम देश के रूप में अपनाया। उन्हें भूख, गरीबी, और सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिसके कारण उन्हें अपने देश और परिवार को छोड़ना पड़ा। यह एक कठिन चुनौती थी,लेकिन फिर भी उन्होंने इस नए देश को अपना घर बना लिया है । सूरीनामी कविताएँ इस अनूठे सागर में बसी हैं, जिनमें छिपी हुयी हैं उनकी मूल संवेदनाएँ। उनकी कविताओं में उन पुराने खून की भावना है, जो उनके पूर्वजों ने इस देश के लिए बहाये हैं । वे जीवंत इतिहास हैं, इन हालातों में, सूरीनाम के भारतीय समुदाय का इतिहास एक कविता बन गया है, जिसमें उनके संघर्ष एवं धैर्य की कहानी है, जो आज भी हमें इनके साथ जीने की उत्सुकता प्रदान करती है। देवानंद शिवराज जी की ये पंक्तियाँ उदहारण स्वरूप प्रतुत है :-

"मन मा बहुत दुख पइली कि/ छुटल देश हिन्दुस्तान
गाँव, सहेलियाँ, भाई बहना/ छुटल अम्मी जान
कि छुटल देश हिन्दुस्तान। /गली गाँव अरकाठी घूमे बोले श्रीराम
टापू महान
चलो वहाँ चाँदी के लोटे में पीना पानी, सब मान
और करना सोनो की थाली में निसदिन तू खान पान कि
छुटल देश हिन्दुस्तान।"[१२]

यथार्थ को सिर्फ एक फोटोग्राफ के रूप में चित्रण करने के साथ भी उसी यथार्थ की आलोचना करना भी एक रचनाकार का दायित्व होता है। डॉ ललित श्रीवास्तव जी ने इस आलोचनात्मक यथार्थवादी रचनाओं की विशेषताओं के रूप में यह बताया है कि "यथार्थवादियों ने तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण तथा सामंतवादी व्यवस्था की आलोचना करते हुए लेखन की शुरूआत की थी। आलोचनात्मक यथार्थवादियों ने अपने विवेक से पूँजीवादी समाज के अमानवीय व्यवहार की आलोचना की है तथा साथ ही सामंतवादी व्यवस्था के पतन की सम्भावना व्यक्त की है।"[१३] सूरीनाम की तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था पर कवियों ने अपनी कलम से एक अद्वितीय चित्र बनाया है, जिसमें वे उच्चतम रूप से निर्वहन और नीतिगत असमानता के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद कर रहे हैं। इन कवियों ने न ही सिर्फ सूरीनाम के राजनेताओं की आलोचना की बल्कि उनके द्वारा अपने दायित्व को भूल जाने की बातों पर भी आलोचना की है। इन कविताओं के माध्यम से, कवियों ने सामाजिक न्याय की मांग की है और उन्होंने जनता को शासन के बहाने, नेतागिरी के आड़े, और लूटनेवाले व्यवस्था के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित भी किया है।

"क्या फायदा बोट बटोरना जब तुम्हें आता नहीं जोड़ना
केवल फूट बोकर अपना खीस निपोरना।
जनता की भलाई का बहाना/ बढ़ता अपना धन-दौलत-खजाना
जनता के पसीना को जो खाए लूट-लूट कर/वही मरता है घुट-घुट कर।"[१४]

इस प्रकार कवियों ने न केवल कलम का उपयोग करके नेताओं की नीतिगत विफलता को उजागर किया है,अपितु उन्होंने समाज को एक सकारात्मक परिवर्तन के लिए भी समर्थन देने का कार्य किया है। विभिन्न आलोचकों के मतों एवं सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए यह समझा जा सकता है कि उनकी वेदना, निराशा, पीड़ा और संघर्ष को सच्चे रूप से व्यक्त करने के लिए कविता से बेहतर अन्य कोई माध्यम नहीं हैं। सूरीनाम की कविताएँ यथार्थ चित्रण करती हुई यथार्थ बोध को जगाने की कोशिश करती हैं। कविता ,समष्टिगत यथार्थ की क्रूर एवं विषम परिस्थितियों के चित्रण प्रस्तुत करने के साथ-साथ वास्तविक जीवन की ओर भी इशारा करती हैं। तत्कालीन युगीन परिस्थितियों को प्रतिपादित करती हुई,ये कविताएँ यथार्थवाद की आधारभूमि भी तैयार करती है । वस्तविक रूप से व्यक्ति, समाज एवं जीवन का चित्रण सूरीनाम की कविताओं की विशेषता हैं। यथार्थ का वस्तुनिष्ठ चित्रण इन कवियों का लक्ष्य है।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. सूरीनाम,पुष्पिता अवस्थी, नेशनल बुक ट्रस्ट,इंडिया,नई दिल्ली २०१२, पृ सं. १३४
2. सरनामी हिंदी - हिंदी का विश्व फलक, विमलेश क्रांति वर्मा, भावना सक्सेना, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली २०२१, पृ सं ५६
3. कुछ विचार, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद १९६५, पृ सं ४९
4. हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, त्रिभुवन सिंह,हिंदी प्रचारक पुस्ताकालय १९६१, पृ सं ९७
5. सरनामी हिंदी : हिंदी का विश्वफलक,विमलेश कांति वर्मा,भावना सक्सेना,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास २०२१, पृ.सं ११
6. सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य,विमलेश क्रांति वर्मा, भावना सक्सेना, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली २०१५,पृ. सं ७९
7. सूरीनाम का सृजनात्मक साहित्य,पुष्पिता अवस्थी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली २०१२, पृ. सं १९३
8. अठारह उपन्यास, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाश,नई दिल्ली १९८१, पृ सं १११
9. सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य,विमलेश क्रांति वर्मा, भावना सक्सेना, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली २०१५,पृ. सं ६९
10. सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य,विमलेश क्रांति वर्मा, भावना सक्सेना, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली २०१५,पृ. सं ६९
11. उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, सुरेश दीन्हा, रामा प्रकाशन, लखनऊ ११८२, पृ. सं १६४
12. सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य,विमलेश क्रांति वर्मा, भावना सक्सेना, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली २०१५,पृ. सं ८३
13. साहित्यशास्त्र और हिंदी आलोचना, डॉ.ललित श्रीवास्तव,ठाकुर प्रकाशन,लखनऊ २०२३,पृ.सं २२३
14. सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य,विमलेश क्रांति वर्मा, भावना सक्सेना, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली २०१५,पृ. सं १६४